विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

RNI रजि. नं. 19156 • बुद्धवर्ष 2570, 14 नवंबर, 2026, वर्ष 2, अंक 9 • (संशोधित) (जुलाई 1971 से लगातार प्रकाशित) **• प्रति अंक शुल्क ₹ 0.00**

अनेक भाषाओं में पत्रिका देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 100.00, (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

धम्मवाणी

अप्पमादरतो भिक्खु, पमादे भयदस्सि वा।
संयोजनं अणुं थूलं, डहं अग्गीव गच्छति।।

धम्मपदपाळि- 31, अप्पमादवग्गो

जो साधक अप्रमाद में रत रहता है, या प्रमाद में भय देखता है, वह अपने छोटे-बड़े सभी (कर्म-संस्कारों के) बंधनों को आग की भांति जलाते हुए चलता है।

भारत का प्रथम विपश्यना केंद्र

पूज्य गुरुजी का उद्बोधन— (27-10-2002)

आदरणीय भिक्षु संघ, धर्म प्रेमी सज्जनो, सन्नारियो!

धम्म गिरि के इस धर्म स्थान की स्थापना के 25 वर्ष हुए। इसने विश्व के लिए गंगोत्री का काम किया। भारत की यह बहुत पुरातन विद्या जिसने गंगा के समान सारे भारत को ही नहीं, कभी सारे विश्व को निर्मल किया था, पवित्र किया था, वह किसी कारण से भारत में नितांत विलुप्त हो गई। अनेक देशों में गई, वहां भी विलुप्त हो गई। केवल एक पड़ोसी देश के थोड़े से लोगों ने, सदियों तक इसे शुद्ध रूप में संभाल कर रखा तो हमें प्राप्त हुई। पूरे भारत में तो लगभग 500 वर्ष, लेकिन महाराष्ट्र में 700 वर्ष तक लोक कल्याण करती रही।

किसी ने मुझसे पूछा कि आपने बर्मा से आकर यहीं से धर्म क्यों आरंभ किया? आपने इस स्थान को क्यों चुना? मैं समझता हूं कि मैंने नहीं चुना, इस स्थान ने धर्म को चुन लिया। यह बहुत पवित्र स्थान है। हम विपश्यना केंद्र के लिए एक उचित स्थान की खोज कर रहे थे। नासिक में एक शिविर लगा और वहां से लौट कर बम्बई जाते हुए यहां के भोजराज संचेती नामक एक साधक ने अपने घर के सामने हमारी गाड़ी रोकी और कहा कि आप स्थान-स्थान पर विपश्यना केंद्र स्थापित करने के लिए उपयुक्त जगह ढूंढ रहे हैं; चलिए मैं आपको दिखाता हूं, और मुझे यहां ले आया। आते ही बड़ी धर्ममयी अनुभूति हुई तो मैंने तुरंत कहा, स्थान बहुत पवित्र है, यहीं कोई केंद्र बने। मुझे बताया गया कि इसके इर्द-गिर्द कब्रिस्तान है, श्मशान भूमि है, पारसियों का कुँआ है। यहां बहुत थोड़े से लोग रहते हैं, वे भी नशा-पता करने वाले। आपने कैसे उपयुक्त समझा? मैंने यही जवाब दिया कि मैं नहीं, इस स्थान ने मुझको उपयुक्त समझा। तभी तो यहां आते ही सारे शरीर में धर्ममयी अनुभूति हुई, इसीलिए स्थान का चुनाव हुआ, विपश्यना केंद्र की स्थापना हुई। उस समय तो ऐसा सोच भी नहीं सकते थे कि इसका फैलाव सारे विश्व में होगा। चाहते तो अवश्य थे लेकिन बहुत शीघ्र यह साबित हो गया कि यह स्थान सचमुच बहुत पवित्र है। जैसे हिमालय में गंगोत्री पवित्र है, उस गंगोत्री से निकला हुआ जल कितना पावन, पारदर्शी है और वह जलधारा पहाड़ों से नीचे बहती हुई सारे उत्तर भारत के मैदान को कितना उपजाऊ बनती है। ऐसे ही यह स्थान भी पावन गंगोत्री के समान साबित हुआ। बहुत बाद में मालूम हुआ कि सदियों पहले कोई संत यहां विपश्यना किया करते थे।.... (शेषांश- क्रमशः अगले अंक में।)

धम्मगिरि का इतिहास

पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का जी जब म्यंमा (बरमा) से आये, तब से लगातार बंजारों का-सा शिविर (Gypsy camp) ही लगाते रहे थे। मुंबई के ऐसे ही एक शिविर में बैठे हुए श्री श्रीराम एवं श्रीमती सुमन तापड़िया 1970 में विश्व भ्रमण करते हुए जब बरमा पहुँचे तो भारतीय साधकों में ये पहले युगल थे जो IMC में सयाजी ऊ बा खिन से मिले। जब सयाजी से कोई योग्य सेवा की बात पूछी तो उनका उत्तर था कि भारत में कोई विपश्यना केंद्र स्थापित करने में सहयोग दे सको तो यह तुम्हारी सबसे बड़ी सेवा होगी। भारत आते ही वे इस काम में लग गये, परंतु किसी उपयुक्त स्थान का चुनाव नहीं हो पा रहा था।

बहुत लंबी खोजबीन के बाद दिसंबर 1973 में नाशिक में लगे एक शिविर का समापन करके मुंबई लौटते समय रास्ते में इगतपुरी में पूज्य गुरुजी को यह जमीन दिखायी गयी, जिसे स्वीकृति देते हुए उन्होंने कहा, इस जमीन को मैंने नहीं, बल्कि धर्म ने इसे चुना है। केवल आम के कुछ पेड़ों वाली यह 17 एकड़ जमीन, गांव से लगभग 50 फुट की ऊंचाई पर है जहां चारों ओर से निर्बाध हवाएं बहती रहती हैं। जनवरी 1974 में इसे खरीद लिया गया और शीघ्र ही लगभग 80 साधकों के लिए आवश्यक निर्माण कार्य तेजी से आरंभ हो गया।

इगतपुरी मुंबई से लगभग 135 कि.मी. दूर है और यह समुद्र तल से लगभग 2000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। मौसम सुहावना और तापमान औसतन 20 से 35 डिग्री सेल्सियस रहता है। बरसात यहां 110 से 180 इंच तक होती थी परंतु पर्यावरण परिवर्तन के कारण धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

साधकों का तपोदान

जमीन खरीदते ही कुछ साधक यहां सेवा देने के लिए चले आये। उनमें से एक ने मुंबई जाकर गुरुजी से पूछा कि गुरुजी हम क्या सेवा दे सकते हैं? तो उनका उत्तर था, "तुम अधिक से अधिक साधना करके इस धरती को तपोदान प्रदान करो।" आस्ट्रेलिया के मि. ग्राहम गैम्बी काम में लग गये। उस समय यहां न बिजली-पानी की सुविधा, न रहने के लिए योग्य निवास। ऊपर से सांप-बिच्छू तथा अन्य जंगली जानवरों का खतरा भी। पुराने मकानों में गाय, बकरियों की मींगनी की परतों पर परतें जमी हुईं। यह बहादुर योद्धा अकेले ही 50-60 फिट नीचे उतर कर, कुंए से पानी खींच कर, बाल्टी भर कर लाता और दाईं ओर के भवन के 3 कमरों की सफाई करने लगता। सोने के लिए श्री भोजराज संचेती ने कोई लकड़ी का पट्टा भिजवा दिया। श्री नारायण दासरवार ने साथ दिया। दायें-बाएं दो कमरों में दोनों सोते और बीच के बड़े हॉल में साधना होती। गांव के कुछ अन्य साधक भी आने लगे। कुछ विदेशी भी आकर जुड़ गए। निर्माणकार्य आरंभ हुआ तब कुछ वर्कर भी रहने लगे और रौनक बढ़ गयी।

धम्मगिरि का नामकरण एवं हरियाली

फरवरी, 1975 में पूज्य गुरुजी ने इसे **"धम्मगिरि, विपश्यना विश्व विद्यापीठ"** नाम दिया। पुराने भवनों की मरम्मत करवा कर, उनमें 12 से 16 अप्रेल, 1975 तक पुराने साधकों का एक लघु शिविर हुआ, जिसमें 76 साधकों ने भाग लिया।

इसी समय बगल की लगभग चार एकड़ जमीन और खरीद ली गयी, जिसे गुरुजी ने **शांति-पठार** नाम दिया। यहां पर 248 शून्यागारों वाला एक पगोडा बनाने की घोषणा की गयी। इसके लिए दान आने लगे। जून 1975 में शांति-पठार पर, एवं पूरे धम्मगिरि क्षेत्र में पेड़-पौधे लगाने का काम आरंभ हो गया। मि. ग्राहम गैम्बी- उत्तर भारत की यात्रा करते हुए- बोधगया के **'बोधिवृक्ष'** की शाखा, सारनाथ से **'श्रीलंका बोधिवृक्ष'** की शाखा, और श्रावस्ती से **'आनंद बोधिवृक्ष'** की शाखा लेकर आये, तो अमेरिका के मि. राबर्ट होवर, जो सयाजी ऊ बा खिन के शिष्य थे, सयाजी के आश्रम से **'बरमी बोधिवृक्ष'** की शाखा लेकर आये। इन्हें शांतिपठार के चारों कोनों पर लगावाया गया तथा केंद्र-परिसर में अन्य अनेक वृक्ष भी लगवाये गये। वन-विभाग से प्राप्त नीलगिरि व अन्य वृक्षों के 5000 पौधे यथास्थान लगाए गए। पूरे परिसर में कम पानी से भी जीवित रहने वाले वृक्षों के बीज बोये गये, जिनके कारण पूरा क्षेत्र हरियाली से भरने लगा।

पहला शिविर 12 से 22 फरवरी, 76 तक लगने की घोषणा हुई थी, परंतु आश्रम के निर्माण कार्य में हो रहे विलंब को देखते हुए उसे सयाजी ऊ बा खिन के जन्म-दिन 25 मार्च से शुरू करने का निश्चय किया गया, जिनकी प्रतिबद्धता, कृतज्ञता और करुणा से ही विपश्यना विद्या भारत वापस लौटी। अतः साधकों से निवेदन किया गया कि वे 24 मार्च की शाम तक इगतपुरी पहुँच जाएं ताकि 25 मार्च को सुबह आश्रम के उद्घाटन समारोह में भी शामिल हो सकें।

गुरुजी चाहते थे कि यहां की धरती को साधनानुकूल बनाने के लिए निर्धारित शिविरों के पहले वे अपना एक स्वयं-शिविर कर लें, जबकि उनका स्वास्थ्य पहले से ही कुछ खराब चल रहा था। स्वयं-शिविर आरंभ करते ही उनकी वेदना बढ़ गयी और 21 मार्च, 1975 को स्थिति अधिक खराब हो गयी तो कनाडा के साधक डॉक्टर जॉर्ज पोलैंड के सहयोग से उन्हें यहां से सीधे बम्बई अस्पताल ले जाया गया। वहां पहुँचते ही उनके पित्ताशय का ऑपरेशन करके जैसे ही गालब्लैडर बाहर निकाला गया, तस्तरी में रखते ही वह फट गया। यही यदि अंदर फट जाता तो स्थिति बहुत खराब हो जाती।

इस ऑपरेशन के बाद उन्हें कम-से-कम 2-3 महीने तक घर पर ही स्वास्थ्य लाभ लेने की सलाह दी गयी। अतः पूर्व निर्धारित उपरोक्त सभी कार्यक्रम स्थगित कर दिये गये और उनकी जगह गुरुजी ने टेप चलाकर पुराने साधकों को **अष्टशील** पालन करते हुए अपना **स्वयं-शिविर** लगाते रहने की सलाह दी। ताकि साधकों को अधिकतम लाभ मिले और केंद्र का वातावरण भी साधना के अनुकूल बनता रहे। अंततः यहां की तीव्र वर्षा ऋतु को देखते हुए दीवाली पूर्व तक एक-के-बाद एक, 10-15 लोगों के **स्वयं-शिविर ही लगते रहे।**

तदर्थ स्थायी रूप से यहां सभी सुविधाओं की व्यवस्था कर दी गयी थी। श्री महावीर शर्मा (महाराज) ने रसोई आदि का काम संभाला और साधकों के सुरक्षित व सुविधाजनक निवासादि के लिए मुंबई से ट्रस्टियों ने 100 नये लोहे के पलंग और उतने ही नए गद्दे, तकिए, चद्दरें, कंबल आदि ट्रक से भिजवा दिए ताकि किसी को कोई असुविधा न हो और आगे के शिविरों में आएं।

बरसात बाद घास-फूस तथा मिट्टी आदि से बनने वाली कई कुटियाओं का निर्माण किया गया। मुंबई के पास नारगोल शिविर के दौरान काम में आयी वहां की एक पिरामिडनुमा पक्की कुटिया का नमूना भी आजमाया गया कि वे यहां के वातावरण के लिए कितनी कारगर सिद्ध होंगी। ऐसी दो कुटियाएं वर्तमान महिला कार्यालय की जगह पर बनवायी गई थीं, जो अच्छी लगीं और इनमें स्वागत-कक्ष (रिसेप्सन) एवं लेखा कार्यालय का काम होता रहा।

हैदराबाद का विपश्यना केंद्र

जब धम्मगिरि का केंद्र-निर्माण-कार्य चल रहा था तब हैदराबाद के श्री रतीलाल मेहता गुरुजी से मिलने आये। क्योंकि जब से यहां काम शुरू हुआ तभी से पूज्य गुरुजी कभी कार से, कभी रेल्वे द्वारा धम्मगिरि पर नियमित रूप से आने लगे थे। एक बार तो टैक्सी के अभाव में हाथ में अपना 8-10 किलो वजन का बैग लेकर स्टेशन से पैदल ही चले आये। क्योंकि तब कोई फोन की सुविधा नहीं थी। श्री मेहता जी इसके पहले कई शिविर कर चुके थे और चाहते थे कि हैदराबाद में भी एक विपश्यना केंद्र बने। इसके पहले उन्होंने वहां अपनी फैक्ट्री—कुसुम इंडस्ट्रीज में 1973 व 74 में दो शिविर लगवा कर अपने पूरे परिवार को साधक बना लिया था। अब अपनी दो एकड़ जमीन का दान देते हुए उन्होंने स्वयं ही निर्माणकार्य करवाने की जिम्मेदारी ली तो पू. गुरुजी ने उन्हें अनुमति दे दी। काम शुरू हो गया और वह केंद्र भी करीब 50 लोगों की सुविधा के साथ 1976 की वर्षा-ऋतु तक लगभग तैयार हो गया था, परंतु पूज्य गुरुजी अभी पूरी तरह स्वस्थ नहीं हुए थे इसलिए सितंबर,76 में ही जा सके।

इस बीच गुरुजी ने केंद्र का नाम **"धम्मखेत्त, अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना केंद्र"**, रख कर उन्हें भिजवा दिया ताकि वे उस नाम-पते से पत्राचार कर सकें। 4 सितंबर, 1976 को हैदराबाद केंद्र का उद्घाटन किया और 4 से 15 एवं 16 से 27 सितंबर तक वहां दो शिविर लगाकर मुंबई लौटे।

धम्मगिरि का विधिवत उद्घाटन

दीपावली के बाद 27 अक्टूबर, 1976 को धम्मगिरि के शिविर का विधिवत उद्घाटन किया गया। यहां एक मेला लगा कर आसपास के लोगों को आमंत्रित किया गया। गांववालों को शिविरों का लाभ लेने के लिए गुरुजी ने आवाहन-प्रवचन दिया। इस प्रकार धम्मगिरि का पहला 10-दिन का शिविर 27-10 को लगा और पहला **30-दिवसीय** 2-12 से 1-1-77 तक, जिसमें 23 लोग बैठे।

धम्मगिरि का आचार्य निवास

पूज्य गुरुजी के लिए बना धम्मगिरि का आचार्य निवास उपयोग में नहीं लाया जा सका, क्योंकि वह कर्ज में डूबा हुआ था। गुरुजी ने निश्चय किया कि जब तक ठेकेदार का कर्ज उतर नहीं जाता, वे इसका उपयोग नहीं करेंगे। तब तक उनका और पू. माताजी का निवास **"डी"** डॉरमेटरी में हुआ, जिसे चटाई के सहयोग से तीन भागों में बांटा गया। पिछले भाग में उन दोनों का निवास, बीच में गुरुजी का कार्यालय और दरवाजे के पास एक ओर उनसे मिलने वालों का एक छोटा कक्ष व दूसरी ओर के छोटे कक्ष में यादव का निवास और कार्यालय बना।

स्नान व शौच आदि के लिए वे दोनों, सामूहिक शौचालय में नीचे सीढ़ियां चढ़-उतर कर जाते रहे। हाथ धोने या लघुशंका के लिए डॉरमेटरी के पीछे नल व पाइप जोड़ दी गई। इसे चटाई से घेर कर, नीचे लादी बिछा कर बाथरूम जैसा बनाया गया। गर्म पानी एक बाई ला देती। नहाने और दाढ़ी बनाने के लिए गुरुजी सामूहिक स्नानागार में ही जाते। लगभग दो महीने तक यही क्रम रहा। फरवरी, 77 में दुबारा लौटे, तो कर्ज चुका दिया गया था। तभी अपने मूल निवास का उपयोग कर सके। इस पर उन्होंने एक लेख लिखा— **"विद्यापीठ ऋण-मुक्त"**। यह पत्रिका में छपा और ट्रस्टियों को यह पाठ सीखने को मिला कि हम उतना ही खर्च करें, जितना हमारे पास दान आये। किसी पर बोझ न बनें।

जयपुर की जेल में विपश्यना

धम्मगिरि के कार्यक्रम पूरे होने के बाद पूज्य गुरुजी ने 4 से 15 जनवरी, 1977 तक जयपुर के केंद्रीय कारागार में 108 कैदियों का एक शिविर लगाया।

पू. गुरुजी बोधगया गये तो बरमी विहार में 129 लोगों का एक बड़ा शिविर लगाया और 15 लोगों के साथ एक **स्वयं-शिविर** भी किया।

दुबारा इगतपुरी आये तो आचार्य निवास में रहते हुए लगातार 6 शिविर लगाये, जिसमें 3 से 14 मार्च, 77 के शिविर में 130 लोग सम्मिलित हुए। 80 लोगों की क्षमता वाले स्थान पर 50 साधक अधिक आ गये तो अनेक लोग अपने टेंट में रहे तथा ऐसी ही कुछ और वैकल्पिक व्यवस्था की गयी। लेकिन साधकों की संख्या बढ़ती हुई 150 के पार ही जाती रही। जैसे-तैसे रह कर भी साधक खुश रहते, परंतु धर्म से वंचित रहना उन्हें स्वीकार्य नहीं था।

जनवरी 1978 में पूज्य गुरुजी ने अपना स्वयं शिविर धम्मगिरि पर किया तो उसके बाद यहां पगोडा-निर्माण का कार्य तेजी से आगे बढ़ने लगा।

मार्च, 79 के 158वें शिविर में साधकों की संख्या 209 तक पहुँच गयी। दान भी आने लगा तो कुछ पक्के निवास भी बनने लगे। साथ ही झोपड़ियों और टेंटों का सहारा भी लिया जाता रहा। लोग धर्मलाभ लेते चले गये।

शांति पठार के छोटे पगोडा का उद्घाटन-मेला

12 मार्च, 79 को छोटे पगोडा का उद्घाटन हुआ। पुनः धम्मगिरि पर मैत्री-मिलन, यानी, **धम्म मेले** का कार्यक्रम रखा गया, ठंडे पेय और नाश्ते के अतिरिक्त पूज्य गुरुजी का प्रवचन भी हुआ।

जुलाई-अगस्त 1979 में विदेश-यात्रा का कार्यक्रम बना तो फ्रांस, कनाडा व इंगलैंड में पांच शिविर लगा कर लौटने के बाद सितंबर से अधिकांश शिविर इगतपुरी में ही लगाये गये।

29 फरवरी 1980 में पगोडा से लगे धम्म-कक्ष का उद्घाटन हुआ, जो आज महिला साधना-हॉल के नाम से जाना जाता है।

1981 में पुलिस की फायरिंग रेंज हटवाने के लिए आवेदन किया गया और 2005 में हटवाई गई। इसके चलते बंदूक चलाने की ट्रेनिंग करने वाले पुलिसकर्मी बड़ी संख्या में आते और फायरिंग होती तो साधक डर जाते। क्योंकि पहाड़ की पथरीली चट्टानों से टकरा कर प्रतिध्वनि की आवाज कई गुना बढ़ जाती और ऐसा लगता जैसे कोई घमासान लड़ाई चल रही हो। अनेक साधक-साधिकाओं की शिकायतों पर 1981 में सरकार से आपत्ति दर्ज करायी गयी और बदले में उन्हें कहीं दूसरी जगह भूमि खरीद कर देने के कई वर्षों बाद बडी मुश्किल से उस भयानक आवाज से छुट्टी मिली।

1982 के आरंभ में पूज्य गुरुजी ने 8 सहायक आचार्यों की नियुक्ति की, ताकि उनकी अनुपस्थिति में भी शिविर सतत चलते रहें। सहायक आचार्य द्वारा संचालित धम्मगिरि पर पहला शिविर मई, 1982 में श्री राठीजी द्वारा लगाया गया और मि. बिल हार्ट ने बोधगया में विदेशियों के लिए शिविर लगाये।

धीरे-धीरे नए सहायक आचार्यों की संख्या बढ़ने लगी और जब उनके द्वारा नियमित रूप से अधिकाधिक शिविर लगाये जाने लगे, तब पुरुष व महिला सहायक आचार्यों के लिए अलग-अलग आचार्य-निवास भी बनाए गए।

मार्च 1984 में धम्मगिरि में ही 3 दिवसीय आनापान लघु शिविर लगाने का प्रयोग किया गया परंतु कोई ठोस परिणाम न मिलने पर इसे रोक दिया गया।

1984 में ही जब **साधना-कक्ष नं. 1** बहुत छोटा पड़ने लगा तो एक नए अष्टकोणीय **धम्म-कक्ष नं. 2** का निर्माण कई चरणों में हुआ, जिसमें अब 350 लोग बैठ कर ध्यान कर सकते हैं। यह **पुरुष साधना-कक्ष** कहलाया।

कुछ समय बाद 100 लोगों के लिए कमल के फूल के आकार वाला **धम्म-कक्ष नं. 3** बना। क्योंकि इसके नीचे पहले से ही एक **लघु कक्ष** में अन्य भाषाओं के प्रवचन होते थे। वहां अब साधकों का निवास बना दिया गया है।

अप्रेल 1985 में बच्चों के लिए 3 दिवसीय आनापान शिविर लगाया गया। फिर दो दिन के और एक दिन के आनापान शिविर लगे और रेकार्डिंग की गई। बच्चों के शिवर-संचालन के लिए **बाल-शिविर-शिक्षक** नियुक्त होते हैं।

विपश्यना विशोधन विन्यास की स्थापना

1985 में पूज्य गुरुजी ने परियत्ति, यानी, प्रकाशन का काम करने के लिए एक अलग ट्रस्ट की स्थापना की— "विपश्यना विशोधन विन्यास", जिसके अंतर्गत पालि पंडितों की नियुक्ति और उनके द्वारा संपादित किया हुआ साहित्य प्रकाशन होता है। पालि भाषा की पढ़ाई का काम तो विद्यापीठ की स्थापना होने के समय से ही चलता था, परंतु विधिवत प्रशिक्षण और पालि पंडितों द्वारा बड़े पैमाने पर काम होने को ध्यान में रखते हुए इस नए ट्रस्ट की स्थापना हुई। इसके लिए नए भवनों का भी निर्माण किया गया।

20 दिसंबर **1986** से एक 10 दिन का शिविर लगा कर, उसमें पालि पंडितों को पटिपत्ति का व्यावहारिक ज्ञान अर्थात विपश्यना सीखने का अवसर दिया गया। इसके अंत में 31 दिसंबर, 86 व 1 जनवरी 87 को— दो दिन का **स्वानुभूतिक सेमिनार** हुआ, जिसमें सबने अपने-अपने अनुभव सुनाए और अपने विचार व्यक्त किए, जिन्हें लिपिवद्ध करके 15 मार्च 1987 की पत्रिका में प्रकाशित किया गया है। यह प्रयोग बहुत सफल रहा। कई विदेशी भी इस **पटिपत्ति एवं परियत्ति** कार्यक्रम से बहुत प्रसन्न व लाभान्वित हुए।

धम्मगिरि पर 40 दिन का पहला दीर्घ शिविर

धम्मगिरि पर 4 से 19 जनवरी, 1987 एवं 1988 में भी **गुरुजी ने** 15 दिन के **स्वयं-शिविर** किए और 22-जन., 1988 से **30** व **40 दिन** के **दो दीर्घ शिविर** एक साथ आरंभ हुए। इसके पहले 30-दिन के अनेक शि. आयोजित हो चुके थे।

1988 में महिला निवासों का विस्तार किया गया और उनके लिए प्रशाधन आदि की प्रचुर सुविधाएं बनायी गयीं।

धम्मगिरि के अन्य सेमिनार्स

1989 के दिसंबर में **Vipassana: Addiction & Health** पर सेमिनार हुआ, पुस्तक छपी।
1990 के फरवरी में **The Importance of Vedanā & Sampajañña**, at D.G. पुस्तक छपी।
1995 May- **Dharma : It's True Nature,** (An International Seminar) at D.G.
2005 में 15-16 अक्टूबर को **विपश्यना और आयुर्वेद** पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस समय भगवान बुद्ध के वैद्य रहे जीवक पर एक पुस्तक प्रकाशित की गयी और हिंदी एवं अंग्रेजी के लेखों का संग्रह किया गया।

धम्मगिरि के बड़े पगोडा का उद्घाटन

1990 में शून्यागारों का विस्तार करते हुए छोटे पगोडा को ढकते हुए, उसके बाहर से बड़ा और **ऊंचा पगोडा** बनाने का काम आरंभ हुआ। यह बड़ा काम था और इसे पूरा करने में अधिक समय लगा, यानी, 1994 में इसका **उद्घाटन** हुआ।

1991 में पूज्य गुरुजी ने **धम्मचक्कपवत्तनसुत्त** पर पहला प्रवचन दिया। सुत्त का पाठ भी किया और रेकार्ड कर लिया गया, जो हम अक्सर सुनते रहते हैं।

20 अप्रेल 1994 को शांतिपठार के बड़े **पगोडा का छत्रारोहण समारोह** हुआ। स्वर्ण मंडित छत्र जयपुर से बन कर आया।

जुलाई, 2000 में **तपोवन 1** का **उद्घाटन— पगोडा-छत्रारोहण समारोह** के साथ ही पहला **45-दिवसीय** शिविर भी आरंभ हुआ। छत्रारोहण म्यंमा के सँगाईं के प्रसिद्ध भिक्षु ऊ ञाणीसार जी के द्वारा संपन्न हुआ।

इसी समय सयाजी ऊ बा खिन की याद में धम्मगिरि के बगल में **"सयाजी ऊ बा खिन ग्राम"** की स्थापना हुई जो विपश्यना केंद्र से अलग है और अलग से ही इसकी व्यवस्था सुचारुरूप से चल रही है।

2001 में **तपोवन 1** में **60-दिवसीय** का शिविर लगा, जिसमें 97 वरिष्ठ विपश्यना के आचार्यों ने भाग लिया।

2004 में **म्यंमा** (म्यानमार) **द्वार** का निर्माण किया गया जो विश्व प्रसिद्ध हो गया। इसको देखने के लिए दूर-दूर से लोग आने लगे। स्कूल-कालेजों के बच्चे समूह रूप में बसों में भर-भर कर आते रहते हैं।

9 से 17 अप्रेल 2004 तक धम्मगिरि के मुख्य ध्यान-कक्ष में **किशोरों का पहला शिविर** हुआ। अब यहां नियमित रूप से किशोरों के शिविर आयोजित हो रहे हैं। स्थान सीमित है, बच्चे प्रतीक्षा-सूची में रहते हैं। एक शिविर किशोरों का लगता है तो दूसरा किशोरियों का। इन शिविरों में प्रतिदिन दिन में दो बार—सुबह-शाम छोटे-छोटे प्रवचन होते हैं जिससे बच्चों का उत्साह बना रहता है।

2004 में सरकारी **वरिष्ठ अधिकारियों** (उप-जिलाधीशों) के लिए विशेष शिविर 10 से 21 मार्च तक आयोजित किया गया।

2005 में धम्मगिरि के बाहरी परिसर में, जहां आज सौर्य-ऊर्जा पैनल लगे हैं, प्रतिवर्ष राष्ट्रीय स्तर पर **विशाल कुश्ती** (दंगल) होती थी। उसे हटाने के लिए न्यायालय का आदेश प्राप्त हुआ तो बाहरी लोगों का गेट के अंदर आना बंद हुआ।

2006 में **पाळि-हिंदी उन्नत शिक्षा** (एडवांस्ड डिप्लोमा कोर्स) का आयोजन किया गया जो अब विपश्यना विशोधन विन्यास के पगोडा-परिसर, मुंबई में होने लगा है।

2007 में **तपोवन -2** के निर्माण की घोषणा की गयी और पहले उसका **धम्म-कक्ष** बना, बाद में 2009 में **पगोडा का उद्घाटन** हुआ। निवासादि धीरे-धीरे बनते और बढ़ते गये।

2011 में 3 से 5 जून तक पूज्य गुरुजी बागवानी संबंधी काम के लिए धम्मगिरि पधारे और **अंतिम बार** 2012 में 6 से 10 दिसंबर की सहायक आचार्यों की मीटिंग के लिए।

2024 में पूज्य गुरुजी की **जन्म शताब्दी** एवं धम्मगिरि केंद्र की **जमीन खरीदी** की पचासवीं वर्षगांठ (जनवरी 74) का **समारोह** धम्मगिरि पर आयोजित किया गया।

धम्मगिरि पर स्वर्ण-जयंती समारोह

इस वर्ष केंद्र पर होने वाले **"स्वर्ण-जयंती समारोह"** में सम्मिलित होने के लिए साधक सादर आमंत्रित हैं, जैसे कि **3-दिवसीय शिविर**— 26 से 29 नवंबर, 2026. इसकी बुकिंग-लिंक 26 सितंबर को खुल गयी है। और **5 दिसंबर** 2026 को **मेगा कोर्स (महाशिविर)** पुराने साधकों के लिए- सुबह 11 बजे से सायं 4:30 बजे तक रहेगा। इसकी बुकिंग-लिंक 5 नवंबर को खुलेगी।

एक नई बुक: '**धम्म गिरि—हिल ऑफ धम्म**', यह समृद्ध चित्रों वाली अंग्रेजी **कॉफी-टेबल** बुक है, जो इस केंद्र की यात्रा को दर्शाती है। इसमें एक बंजर पहाड़ी से लेकर दुनिया भर में एक प्रसिद्ध साधना-स्थल बनने तक की पूरी कहानी है। दुर्लभ अभिलेखीय तस्वीरें, वर्तमान के विहंगम दृश्य, अनेक पत्र, समय-रेखाएँ और गोयन्काजी के शब्दों में- इसके विकास के व्यापक आयाम और इनके पीछे छिपा शांत उद्देश्य—दोनों को उजागर करती है—कैसे सब के कल्याण हेतु विपश्यना साधना सब को सुलभ कराई जाय।

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. डॉ. कृष्ण स्वरूप द्विवेदी, अहमदाबाद, गुजरात
2. श्रीमती मनु बाजपेई, बोधगया, बिहार

नव नियुक्तियां सहायक आचार्य

1. श्री सुधीर पई, धम्मगिरि, इगतपुरी, महाराष्ट्र
2. श्री संजय ढोले, यवतमाल, महाराष्ट्र
3. श्री नीलेश सिंहल, धुले, महाराष्ट्र
4. श्रीमती काजल कसवाला, सूरत, गुजरात
5. श्रीमती कुसुम पटेल, भुज-कच्छ, गुजरात
6. श्री हरदेव सिंह, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
7-8. श्री राकेश कुमार एवं श्रीमती रेखा रानी, नोएडा, उत्तर प्रदेश
9. कु. कुसुम पोपट, रायपुर, छत्तीसगढ़
10. श्री प्रशांत बी रेड्डी, हैदराबाद, तेलंगाना
11. श्री वसंतकुमार नरसिम्हा, चेन्नई, तमिलनाडु
12. Mr. Suthee Aeknalinratkul, Thailand
13. Mrs. Nantaporn Chaiwongnoi, Thailand
14. Mr. Sonam Thakchoe, Australia

बाल-शिविर शिक्षक

1. कुमारी रंजना मूल्या, उल्हासनगर
2. श्रीमती गीता मुले, ठाणे
3. श्री राकेश गज्जर, अहमदाबाद
4. श्री तीर्थप्पा बी आर, शिवमोग्गा, कर्नाटक
5. श्री बी. सत्यनारायण रेड्डी, बेंगलुरु
6. Mrs. Makara Aom, Cambodia
7. Ms. Piseth Aom, Cambodia
8. Mrs. Theary Lim, Cambodia
9. Mrs. Channita Seng, Cambodia
10. Mr. Samreth Kao, Cambodia
11. Mr. Samphors Seng, Cambodia
12. Mr. Sai Soe Thiha Ohn Myint, Myanmar
13. Mrs. Nang Khin Nu, Myanmar
14. Mrs. Yi Yi Mon, Myanmar
15. Mrs. Nang Yin Min Aye, Myanmar
16. Ms. Nang Hseng Noon, Myanmar
17. Ms. Myint Myint Aye, Myanmar
18. Mrs. Nang Hseng Khay, Myanmar
19. Mrs. Thida Oo, Myanmar
20. Ms. Nang Noon Kham, Myanmar
21. Ms. Khin let Yar, Myanmar
22. Mr. Tin Lin, Myanmar
23. Mrs. Nwe Nwe Lwin, Myanmar
24. Ms. Myat Myat Moe, Myanmar
25. Mr. Tun Naing Win, Myanmar
26. Mr. Thu Ya Hein, Myanmar
27. Mr. Myo Myint Oo, Myanmar
28. Mrs. Kyu Kyu, Myanmar
29. Ms. Khin Chaw Su Mon, Myanmar
30. Mrs. Su Su Htay, Myanmar
31. Ms. Aye Aye Thein, Myanmar
32. Ms. Sandar Soe, Myanmar

दूसरी अंग्रेजी बुक—"एसेंशियल्स ऑफ़ धम्मा" (धर्म के मूल सिद्धांत) में एस. एन. गोयन्का और सयाजी ऊ बा खिन के गहन प्रवचनों का संग्रह है, जो चार आर्य सत्य; अनिच्च, दुक्ख और अनत्त; वेदना-संयुक्त; प्रतीत्यसमुत्पाद; पटिपत्ति और परियत्ति के संबंध; तथा विपश्यना के आलोक में योग जैसे विषयों को दर्शाती है। (इनके हिंदीकरण का काम चल रहा है।)

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक-दिवसीय महाशिविर :-

1. रविवार, 17 जनवरी, 2027 सयाजी ऊ बा खिन एवं माताजी की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में,
2. रविवार, 23 मई, 27 बुद्ध-पूर्णिमा के उपलक्ष्य में,
3. रविवार 18 जुलाई, 27, आषाढ़ पूर्णिमा (धम्मचक्कपवत्तन दिवस) के उपलक्ष्य में
4. रविवार 3 अक्टूबर, 27. शरद-पूर्णिमा एवं पूज्य गुरुजी की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में

2. पगोडा में प्रतिदिन एक दिवसीय शिविर :-

पुराने विपश्यी साधकों के लाभार्थ पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जाते हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं—समग्गानं तपोसुखो। **महाशिविर एवं दैनिक एक दिवसीय शिविरों के लिए संपर्क: 022 50427500 (Board Lines) -** Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644.** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online registration: http://oneday.globalpagoda.org ; **Email:** oneday@globalpagoda.org

*****

दोहे धर्म के

धम्मगिरि से धर्म की, गंग प्रवाहित होय।
रोग शोक सबके मिटें, मुक्ति दुखों से होय।।

तपोभूमि से धरम की, गंग प्रवाहित होय।
जन-जन का होवे भला, जन-जन मंगल होय।।

सुख छाये संसार में, दुखिया रहे न कोय।
जन-जन जगे विपश्यना, सब का मंगल होय।।

सुख छाए इस जगत में, दुखिया रहे न कोय।
जन-जन मन मैत्री जगे, जन-जन मंगल होय।।

दूहा धरम रा

जन जन पीड़ित हो रह्या, किसो' क अत्याचार।
धरम जग्यां ही जगत रो, मिटसी पापाचार।।

धरती पर फिर उमड़सी, धरम गंग री धार।
प्यास बुझासी जगत री, करसी जन उद्धार।।

बेवै धरा पर धरम री, फिर रसवंती धार।
रूखा सूखा चमन फिर, हो ज्यावै गुलजार।।

देख दुखी करुणा जगै, देख सुखी मन मोद।
सैं रै प्रति मैत्री जगै, रवै धरम रो बोध।।

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकॉफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2570, 14 नवंबर, 2026, वर्ष 2, अंक 9

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 100.00, (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50) "विपश्यना" (संशोधित) RNI रजि. नं.19156, **प्रति अंक शुल्क ₹ 0.00**

Posting day- **14th of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)
DATE OF PRINTING: 10 NOVEMBER, 2026, DATE OF PUBLICATION: 14 NOVEMBER, 2026

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244998, 244076, 244086,
244144, 244440, मोबा.: 9405618869
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org